

आधुनिक परिवेश में महिलाओं की बदलती आर्थिक स्थिति: अवसर, बाधाएं और सामाजिक स्वीकार्यता

¹विजय कुमार, ²डॉ. योगेश कुमार

¹शोधार्थी, कला विभाग, मानविकी संकाय
मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
²मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

सार

आधुनिक परिवेश में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। वैश्वीकरण, शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, तकनीकी विकास और सरकारी योजनाओं ने महिलाओं के आर्थिक क्षेत्र में प्रवेश को सरल बनाया है। आज महिलाएँ उद्यमिता, सेवाक्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, स्व-रोज़गार तथा कॉर्पोरेट जगत-सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी बढ़ा रही हैं। इसके बावजूद, सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ, लैंगिक भेदभाव, घरेलू दायित्व, पूँजी की कमी, निर्णयकारी पदों तक सीमित पहुँच जैसे कारक महिलाओं की पूर्ण आर्थिक प्रगति को प्रभावित करते हैं। भारत में महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर अभी भी विश्व औसत से कम है, जो दर्शाती है कि अवसर उपलब्ध होने के बावजूद सामाजिक स्वीकार्यता और संरचनात्मक सहयोग पर्याप्त नहीं है। इसके साथ ही, डिजिटल अर्थव्यवस्था, ई-कॉमर्स, कौशल विकास योजनाएँ, स्वयं सहायता समूह एवं महिला-उन्मुख सरकारी नीतियाँ महिलाओं के लिए नए अवसर उत्पन्न कर रही हैं। सामाजिक दृष्टिकोणों में धीरे-धीरे आने वाला परिवर्तन भी महिलाओं की आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। यह अध्ययन आधुनिक समाज में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करता है तथा अवसरों और बाधाओं दोनों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से मूल्यांकन करता है। साथ ही यह अध्ययन सामाजिक स्वीकार्यता और नीतिगत सहयोग के संबंध पर भी प्रकाश डालता है।

कीवर्ड्स – महिला आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक स्वीकार्यता, अवसर और बाधाएँ, डिजिटल अर्थव्यवस्था, श्रम शक्ति भागीदारी

1. परिचय

आधुनिक परिवेश में महिलाओं की आर्थिक स्थिति निरंतर परिवर्तनशील और बहुआयामी होती जा रही है। ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो महिलाओं की आर्थिक भागीदारी घरेलू कार्यों और सीमित पारंपरिक गतिविधियों तक सीमित थी, जिसे आर्थिक दृष्टि से मान्यता नहीं मिलती थी। लेकिन समय के साथ शिक्षा, औद्योगीकरण, तकनीकी विस्तार, महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा सरकारी नीतियों के प्रभाव से महिलाओं की आर्थिक भूमिका का दायरा व्यापक हुआ है।

भारतीय समाज में लंबे समय तक पितृसत्ता, रूढ़िवादी मान्यताओं और लैंगिक पूर्वाग्रहों ने महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से दूर रखा। उन्हें परिवार संरचना और घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित माना गया। परंतु 21वीं सदी ने इस दृष्टिकोण में उल्लेखनीय बदलाव लाया है। शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं को ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास प्रदान किया है, जिससे वे रोजगार और उद्यमिता दोनों क्षेत्रों में पहचान बना रही हैं। शहरीकरण ने महिलाओं को नए अवसर प्रदान किए और कार्यस्थल संस्कृति में भी धीरे-धीरे सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक भूमिका में परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण कारक बनकर उभरी है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, डिजिटल भुगतान और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को घर बैठे आर्थिक गतिविधियों से जुड़ने का अवसर दिया है। यह अवसर विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण है जो सामाजिक प्रतिबंधों, सुरक्षा चिंताओं या घरेलू दायित्वों के कारण घर से बाहर काम नहीं कर पातीं। महिला उद्यमिता भी पिछले दशक में तेजी से विकसित हुई है। मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया, Udyam Portal, डिजिटल इंडिया और स्वयं सहायता समूहों जैसी सरकारी योजनाओं ने महिलाओं को पूँजी, प्रशिक्षण और बाज़ार तक पहुंच उपलब्ध कराई है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिला उद्यमी उभर रही हैं।

इसके बावजूद चुनौतियाँ अभी भी व्यापक हैं। महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर अभी भी कम है। सामाजिक मान्यताएँ, परिवार द्वारा कार्य के प्रति समर्थन की कमी, सुरक्षा संबंधी प्रश्न, लिंग आधारित भेदभाव, वेतन असमानता, और निर्णयकारी पदों पर सीमित प्रतिनिधित्व जैसी बाधाएँ महिलाओं की आर्थिक उन्नति में अवरोध बनती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भी जटिल होती है जहाँ परंपरागत सोच और अवसरों की कमी महिलाओं के आर्थिक विकास को सीमित करती है। सामाजिक स्वीकार्यता महिलाओं की आर्थिक भूमिका का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। जब तक समाज महिलाओं के काम करने, निर्णय लेने और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने को सकारात्मक रूप से नहीं स्वीकारता, तब तक आर्थिक प्रगति सतत और स्थायी नहीं हो सकती। महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त तब मानी जाएँगी जब वे अपनी आय का उपयोग, रोजगार का चुनाव, व्यवसाय प्रबंधन और वित्तीय निर्णय स्वतंत्र रूप से कर सकें।

अतः आधुनिक परिवेश ने महिलाओं को अनेक अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इन अवसरों का प्रभाव उनकी सामाजिक स्थिति, पारिवारिक समर्थन और सांस्कृतिक मान्यताओं पर निर्भर करता है। यह अध्ययन इसी व्यापक संदर्भ में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. साहित्य की समीक्षा:

पूर्ववर्ती अध्ययनों में महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर अनेक दृष्टिकोणों से चर्चा की गई है। देवी (2018) ने महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और रोजगार अवसरों के योगदान पर जोर दिया है। शर्मा (2017) के अध्ययन में सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक प्रतिबंधों को महिलाओं की आर्थिक प्रगति में प्रमुख अवरोध बताया गया है। मिश्रा (2019) ने डिजिटल अर्थव्यवस्था को महिला-उन्मुख अवसरों का नया स्रोत माना है, विशेषकर उन महिलाओं के लिए जो घर से काम करना पसंद करती हैं। गुप्ता (2020) द्वारा किए गए शोध में महिला उद्यमिता के विकास में सरकारी योजनाओं जैसे मुद्रा योजना और SHGs की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। चतुर्वेदी (2021) के अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक स्वीकार्यता महिला रोजगार के विस्तार का प्रमुख निर्धारक है; आर्थिक अवसर उपलब्ध होने के बावजूद सामाजिक समर्थन के अभाव में महिलाएँ कार्यबल में शामिल नहीं हो पातीं।

अन्य शोधों में यह भी पाया गया है कि वेतन असमानता, लैंगिक भेदभाव, और बच्चों की देखभाल संबंधी जिम्मेदारियाँ महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी को प्रभावित करती हैं। नवीनतम अध्ययनों में डिजिटल वित्तीय समावेशन और उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावनाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। इन सभी निष्कर्षों से स्पष्ट है कि अवसरों के विस्तार के बावजूद सामाजिक व संरचनात्मक चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।

3. अध्ययन का उद्देश्य:

- आधुनिक समाज में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- महिलाओं के लिए उपलब्ध आर्थिक अवसरों-रोजगार, उद्यमिता, डिजिटल प्लेटफॉर्म-का मूल्यांकन करना।
- महिला आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और संरचनात्मक कारकों की पहचान करना।
- महिला आर्थिक सशक्तिकरण में सामाजिक स्वीकार्यता की भूमिका का अध्ययन करना।

- v. नीतिगत उपायों और सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता का विश्लेषण कर भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

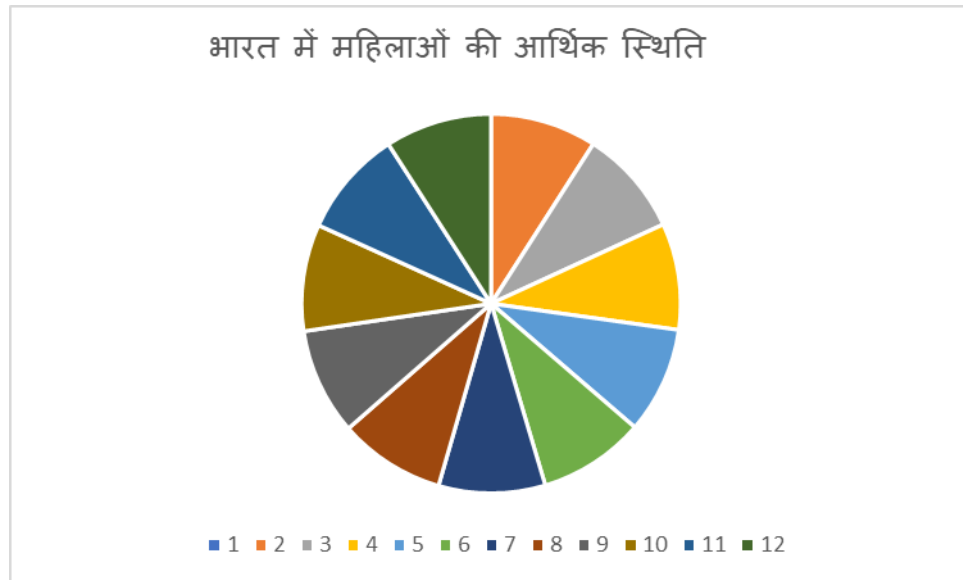
4. शोध पद्धति :

यह शोध पूर्णतः द्वितीयक (Secondary) स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन के लिए विभिन्न शोध-पत्र, सरकारी रिपोर्टें, नीतिगत दस्तावेज, राष्ट्रीय सर्वेक्षण (जैसे-NFHS, NSSO), अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टें (ILO, World Bank), पुस्तकें, जर्नल लेख, समाचार लेख, डिजिटल प्लेटफॉर्म से प्राप्त डाटा और वेबसाइटों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक डेटा विश्लेषण के माध्यम से पिछले दशकों में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तनों, उनकी श्रम शक्ति भागीदारी, उद्यमिता विकास, सामाजिक-पारिवारिक बाधाओं और डिजिटल अवसरों से संबंधित जानकारीयाँ संकलित की गईं। डेटा का विश्लेषण गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है, जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों, नीतिगत प्रभावों और सामाजिक स्वीकार्यता के रुझानों को समझने पर बल दिया गया है। विषय का विश्लेषण समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किया गया है, जिसमें लैंगिक समानता, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मान्यताओं और अवसर-बाधा के संतुलन को समझने का प्रयास किया गया है।

5. महिलाओं की बदलती आर्थिक स्थिति

आधुनिक परिवेश में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। शिक्षा, तकनीकी प्रगति, डिजिटल अर्थव्यवस्था और सरकारी योजनाओं ने महिलाओं के लिए नए आर्थिक अवसर खोले हैं। आज महिलाएँ रोजगार, उद्यमिता, स्वयं सहायता समूहों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से आर्थिक रूप से मजबूत हो रही हैं। हालांकि, इसके साथ सामाजिक बाधाएँ—जैसे पारिवारिक प्रतिबंध, लैंगिक भेदभाव, सुरक्षा चिंताएँ और सामाजिक स्वीकार्यता की कमी—अभी भी मौजूद हैं। सामाजिक दृष्टिकोणों में परिवर्तन और नीतिगत सहयोग महिलाओं की आर्थिक उन्नति को स्थायी बनाने के लिए आवश्यक है। इस बदलते परिवेश में महिलाएँ आर्थिक स्वतंत्रता की नई दिशा प्राप्त कर रही हैं।

Year	Female LFPR(%)	Women_ Entrepreneurship(%)	Female_ Literacy(%)	Digital Literacy(%)	Political_Representation(%)
2015	23.7	12.0	65	18	11.0
2016	24.1	12.5	66	21	11.5
2017	23.5	13.0	68	25	12.0
2018	22.9	13.8	69	29	12.5
2019	21.8	14.2	70	33	13.0
2020	22.5	15.0	72	38	14.0
2021	25.1	16.3	73	44	14.5
2022	27.2	17.5	74	50	15.0
2023	28.4	18.7	75	57	16.0
2024	30.0	19.4	76	63	17.0
2025	30.5	20.0	78	70	18.0



2015 से 2025 के बीच भारत में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा गया है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि महिला श्रम शक्ति भागीदारी (LFPR) में उतार-चढ़ाव के बाद 2020 के बाद तेज़ सुधार हुआ है। महामारी के बाद डिजिटल कार्य, स्वरोज़गार और घरेलू उद्यम बढ़ने से महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी में वृद्धि दिखाई देती है। इसी अवधि में महिला उद्यमिता में निरंतर और

स्थिर बढ़ोतरी हुई, जो माइक्रोफाइनेंस, स्वयं सहायता समूहों (SHGs), मुद्रा लोन, और ऑनलाइन बाजारों तक पहुँच जैसे कारकों से प्रभावित है। महिला शिक्षा और डिजिटल साक्षरता में सबसे तेज़ सकारात्मक बदलाव देखा गया। डिजिटल पहुँच ने न केवल शिक्षा और कौशल सीखने के अवसर बढ़ाए बल्कि कार्य के नए विकल्प—जैसे ऑनलाइन व्यापार, फ्रीलांसिंग और डिजिटल सेवाएँ—भी उपलब्ध कराए, जिनसे आर्थिक स्वतंत्रता में वृद्धि हुई। राजनीतिक प्रतिनिधित्व भी बढ़ा है, जिससे नीति निर्माण में महिलाओं की आवाज़ मज़बूत हुई है, हालांकि यह अब भी सीमित है। कुल मिलाकर, डेटा बताता है कि शिक्षा, डिजिटल अवसर, सरकारी योजनाएँ और सामाजिक जागरूकता महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुधार रहे हैं। फिर भी सामाजिक प्रतिबंध, सुरक्षा चिंताएँ और अनौपचारिक कार्य की चुनौतियाँ अभी भी बाधा बनी हुई हैं।

i. महिलाओं की आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तन

आधुनिक भारत में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं, जो शिक्षा, शहरीकरण, डिजिटलीकरण और नीतिगत हस्तक्षेपों से प्रेरित हैं। 2025 तक, वैश्विक जेंडर गैप इंडेक्स में भारत की रैंकिंग 131वीं पर पहुँच गई है, जो स्वास्थ्य और शिक्षा में गिरावट दर्शाती है, लेकिन आर्थिक भागीदारी और राजनीतिक सशक्तिकरण में सुधार दिखाता है। 2018 की रिपोर्ट के अनुसार, लिंग समानता को बढ़ावा देकर भारत 2025 तक 770 अरब डॉलर का जीडीपी लाभ प्राप्त कर सकता था, जो वास्तविकता में आंशिक रूप से हासिल हुआ है। महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) में वृद्धि हुई है; 2024 में यह 37% के आसपास पहुँची, मुख्यतः अनौपचारिक क्षेत्रों में। आईटी और टेक सेक्टर में महिलाएं 35% कार्यबल का हिस्सा हैं, लेकिन नेतृत्व भूमिकाओं में मात्र 10-11%।

सकारात्मक परिवर्तनों में डिजिटल अर्थव्यवस्था का उदय प्रमुख है, जहां ई-कॉमर्स और फ्रीलांसिंग ने ग्रामीण महिलाओं को अवसर प्रदान किए। गोल्डमैन सैक्स की 'इंडिया वुमेनॉमिक्स' रिपोर्ट (2025) के अनुसार, महिलाओं की औपचारिक रोजगार में वृद्धि से अर्थव्यवस्था को 2.9 ट्रिलियन डॉलर का लाभ हो सकता है। हालांकि, वेतन असमानता बनी हुई है—महिलाओं को पुरुषों से 20-30% कम वेतन मिलता है। महामारी के बाद, अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाओं की वापसी धीमी रही, जहां 70% महिलाएं कार्यरत हैं लेकिन सामाजिक सुरक्षा की कमी से प्रभावित।

सांस्कृतिक रूप से, शहरीकरण ने भूमिकाओं को बदला है; महिलाएं अब CEO और उद्यमी बन रही हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत बंधन बने हुए हैं। आर्थिक परिवर्तन ने परिवारों की आय बढ़ाई, लेकिन लिंग-आधारित हिंसा और कार्य-जीवन संतुलन की चुनौतियाँ बनीं। कुल मिलाकर, ये परिवर्तन आशाजनक हैं, लेकिन समावेशी विकास के लिए वेतन समानता और कौशल उन्नयन आवश्यक है। 2025 तक, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता ने जीडीपी में 60% योगदान की संभावना बढ़ाई है, जो भारत को वैश्विक नेता बना सकती है।

ii. महिलाओं के लिए उपलब्ध आर्थिक अवसरों—रोज़गार, उद्यमिता, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म

भारत में महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों का मूल्यांकन सकारात्मक परिणाम दर्शाता है, विशेषकर रोजगार, उद्यमिता और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म में। 2025 तक, महिलाओं की उद्यमिता से जीडीपी में 1.5 ट्रिलियन डॉलर की वृद्धि संभव है। रोजगार के क्षेत्र में, आईटी, स्वास्थ्य और खुदरा में महिलाओं की भागीदारी 35-40% है, लेकिन नेतृत्व स्तर पर कमी। तमिलनाडु ग्रामीण परिवर्तन परियोजना जैसी पहलें वित्तीय चुनौतियों को दूर कर रही हैं। उद्यमिता में, नीति आयोग की वुमेन एंटरप्रेन्योरशिप प्लेटफ़ॉर्म (WEP) ने मेंटरशिप और संसाधन प्रदान कर हजारों महिलाओं को सशक्त किया।

2025 में, महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को क्रेडिट पहुंच बढ़ाने से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने क्रांति लाई; मैकिंसे रिपोर्ट के अनुसार, डिजिटल पहुंच से महिलाओं की श्रम बाजार भूमिका 27% बढ़ सकती है। ई-कॉमर्स जैसे अमेज़न और फ्लिपकार्ट पर ग्रामीण महिलाएं विक्रेता बन रही हैं, जबकि फ्रीलांसिंग (अपवर्क) से 68 मिलियन महिलाओं को 2025 तक 0.7 ट्रिलियन डॉलर का लाभ। हालांकि, चुनौतियां हैं: डिजिटल साक्षरता की कमी और इंटरनेट पहुंच (ग्रामीण में 50% से कम) बाधा। उद्यमिता में फंडिंग गैप 20-30% है। कुल मूल्यांकन में, ये अवसर समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं, लेकिन ग्रामीण-शहरी असमानता को कम करने की आवश्यकता। डिजिटल स्किलिंग से 2025 तक 15 मिलियन महिलाओं को रोजगार मिला। ये प्लेटफ़ॉर्म न केवल आय बढ़ाते हैं, बल्कि सामाजिक गतिशीलता भी। भविष्य में, AI-आधारित टूल्स से और विस्तार संभव।

iii. महिला आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और संरचनात्मक कारक

भारत में महिला आर्थिक विकास की राह में सामाजिक, सांस्कृतिक और संरचनात्मक बाधाएं प्रमुख हैं, जो लिंग असमानता को गहरा बनाती हैं। सामाजिक कारक जैसे गरीबी, घरेलू हिंसा और जाति-आधारित भेदभाव महिलाओं की भागीदारी को सीमित करते हैं। 2025 की रिपोर्ट्स के अनुसार, अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत 70% महिलाएं आय असुरक्षा और कानूनी सुरक्षा की कमी से जूझ रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, सामाजिक दबाव से महिलाओं की गतिशीलता प्रतिबंधित रहती है, जिससे श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) मात्र 37% है। सांस्कृतिक कारक अधिक गहन हैं, जहां पितृसत्तात्मक मानदंड महिलाओं को घरेलू भूमिकाओं तक बांधे रखते हैं। दिल्ली के अनौपचारिक बस्तियों में अध्ययन से पता चलता है कि सांस्कृतिक पूर्वाग्रह स्व-रोजगार को बाधित करते हैं, विशेषकर विवाह और परिवार की जिम्मेदारियों के कारण। 2025

में, शुई महिलाओं की आर्थिक गतिशीलता पर शोध में उल्लेख है कि गरीबी और माता-पिता की रूढ़िवादी सोच से लड़कियां समय से पहले स्कूल छोड़ देती हैं, जिससे कौशल विकास रुक जाता है। वेतन असमानता (20-30%) और व्यवसायिक अलगाव सांस्कृतिक स्टीग्मा से जुड़े हैं, जहां महिलाएं निम्न-वेतन वाले क्षेत्रों जैसे कृषि या घरेलू काम तक सीमित रहती हैं।

संरचनात्मक बाधाएं आर्थिक संरचना में निहित हैं, जैसे संसाधनों तक पहुंच की कमी—क्रेडिट, भूमि और शिक्षा। येल विश्वविद्यालय की 2024-25 रिपोर्ट से स्पष्ट है कि शहरी-ग्रामीण असमानता में पति की उच्च आय महिलाओं के श्रम की आवश्यकता को कम करती है, जिससे LFPR में गिरावट आती है। एसएमई क्षेत्र में लिंग पूर्वाग्रह वित्तीय प्रणालियों को प्रभावित करते हैं, जिससे महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों का प्रदर्शन प्रभावित होता है। ये कारक परस्पर जुड़े हैं; सांस्कृतिक मानदंड संरचनात्मक गैप्स को मजबूत करते हैं, जबकि सामाजिक कारक शिक्षा और स्वास्थ्य असमानता को बढ़ाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, पितृसत्तात्मक मानसिकता निष्पक्ष वेतन वितरण को अवरुद्ध करती है।

इन बाधाओं की पहचान से बहु-स्तरीय हस्तक्षेप की आवश्यकता उजागर होती है। सामाजिक जागरूकता अभियान, सांस्कृतिक परिवर्तन और संरचनात्मक सुधार जैसे लिंग-संवेदनशील नीतियां आवश्यक हैं। यदि इन्हें संबोधित किया गया, तो 2030 तक LFPR 50% तक पहुंच सकता है, जो जीडीपी में 1 ट्रिलियन डॉलर का योगदान देगा। हालांकि, वर्तमान में ये बाधाएं विकास को धीमा कर रही हैं, विशेषकर महामारी के बाद। कुल मिलाकर, ये कारक न केवल आर्थिक, बल्कि सामाजिक न्याय की चुनौती हैं।

iv. महिला आर्थिक सशक्तिकरण में सामाजिक स्वीकार्यता की भूमिका

सामाजिक स्वीकार्यता महिला आर्थिक सशक्तिकरण का आधारभूत तत्व है, जो निर्णय लेने, संसाधन पहुंच और सामाजिक भूमिकाओं को प्रभावित करती है। भारत में, 2025 की रिपोर्ट्स से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के नेतृत्व की स्वीकृति मात्र 20-25% है, जो आर्थिक सशक्तिकरण को सीमित रखती है। सामाजिक मानदंडों का परिवर्तन आवश्यक है, क्योंकि आय अर्जन से महिलाओं की वित्तीय स्वायत्तता बढ़ती है, लेकिन निर्णय क्षमता और सामाजिक मान्यता बिना स्वीकृति के अपूर्ण रहती है। अध्ययन से पता चलता है कि सामाजिक स्वीकार्यता सशक्तिकरण के बहुआयामी आयामों—निर्णय लेना, हिंसा के प्रति दृष्टिकोण, यौन अधिकार और गतिशीलता—को मजबूत करती है। दिल्ली के अनौपचारिक बस्तियों में, आर्थिक गतिविधि स्वतः सशक्तिकरण नहीं लाती यदि सांस्कृतिक बाधाएं बनी रहें। भौगोलिक विविधता महत्वपूर्ण है; दक्षिण भारत में उच्च स्वीकृति से सशक्तिकरण बेहतर, जबकि उत्तर में पूर्वाग्रह हावी। महिलाएं आय का 90% परिवार कल्याण पर खर्च करती हैं, जो गरीबी उन्मूलन को बढ़ावा देती है, लेकिन सामाजिक मान्यता के अभाव में यह प्रभाव सीमित रहता है। नीतिगत रूप से, सामाजिक स्वीकार्यता को

बढ़ावा देने वाली पहलें जैसे स्वयं सहायता समूह (SHG) सफल रही हैं, जो 15 मिलियन महिलाओं को सशक्त कर चुकी हैं। 2025 में, महिलाओं की सशक्तिकरण नीतियां सामाजिक-आर्थिक प्रभावों पर जोर देती हैं, लेकिन क्रियान्वयन में सांस्कृतिक संवेदनशीलता की कमी है। नेचर जर्नल के अध्ययन से, आय से शारीरिक स्वायत्तता बढ़ती है, लेकिन सामाजिक मान्यता ही पूर्ण सशक्तिकरण सुनिश्चित करती है। LFPR में वृद्धि के लिए मीडिया और शिक्षा अभियान आवश्यक हैं, जो पूर्वाग्रहों को चुनौती दें।

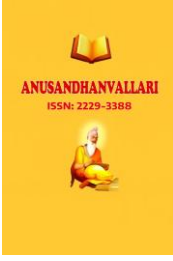
कुल अध्ययन से भूमिका परिवर्तनकारी उभरती है; स्वीकार्यता बढ़ने से जीडीपी में 770 अरब डॉलर का लाभ संभव। हालांकि, पितृसत्तात्मक संरचनाएं बाधा डालती हैं। भविष्य में, सामुदायिक संवाद और लिंग-संवेदनशील नीतियां इस भूमिका को मजबूत करेंगी, जो सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होंगी।

6. निष्कर्ष और सुझाव

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधुनिक परिवेश ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण और सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं। शिक्षा, तकनीकी विकास, डिजिटल प्लेटफॉर्म, उद्यमिता के अवसर और सरकारी योजनाएँ महिलाओं की आर्थिक उन्नति के लिए नए द्वार खोल रही हैं। आज महिलाएँ न केवल पारंपरिक क्षेत्रों में बल्कि नए आर्थिक क्षेत्रों—आई.टी., ई-कॉमर्स, फ्रीलांसिंग, स्टार्टअप—में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। इसके बावजूद सामाजिक बाधाएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं। कई स्थानों पर लैंगिक भेदभाव, रूढ़िवादी सोच, घरेलू दायित्व और परिवारिक समर्थन की कमी महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी और आर्थिक स्वतंत्रता को सीमित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह चुनौती और गहरी दिखाई देती है।

डिजिटल अर्थव्यवस्था महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, परंतु डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट पहुँच और तकनीकी कौशल का अभाव कई महिलाओं को इससे दूर भी रखता है। सरकारी योजनाएँ प्रभावी हैं, लेकिन उनकी जागरूकता, पहुँच और कार्यान्वयन में अंतर बना हुआ है।

सामाजिक स्वीकार्यता महिला आर्थिक सशक्तिकरण का केंद्रीय तत्व है। जब समाज और परिवार महिलाओं के कार्य को सम्मान देते हैं, तब आर्थिक उन्नति का मार्ग और सहज हो जाता है। इसलिए केवल आर्थिक अवसर प्रदान करना पर्याप्त नहीं है; सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन भी आवश्यक हैं। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए आर्थिक, सामाजिक और नीतिगत तीनों स्तरों पर सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं, तभी महिला सशक्तिकरण व्यापक और स्थायी रूप ले सकेगा।



सुझाव

शिक्षा और कौशल विकास पर जोर: महिलाओं के लिए तकनीकी, डिजिटल और व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए। इससे रोजगार और उद्यमिता दोनों क्षेत्र विस्तृत होंगे।

सामाजिक जागरूकता अभियान: परिवार और समाज में महिलाओं के काम को सम्मान देने की आवश्यकता है। लैंगिक रूढ़ियों को बदलने के लिए स्कूल, कॉलेज और समुदाय स्तर पर अभियान चलाए जाएँ।

सरकारी योजनाओं की पहुँच बढ़ाना: कई महिलाएँ सरकारी योजनाओं की जानकारी न होने से लाभ से वंचित रह जाती हैं। जागरूकता कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और डिजिटल सूचनाएँ उन्हें अधिक सुलभ बनाएं।

डिजिटल साक्षरता का विस्तार: डिजिटल अर्थव्यवस्था से महिलाओं को जोड़ने के लिए इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल प्रशिक्षण की पहुँच बढ़ानी होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष पहल जरूरी है।

सुरक्षित और अनुकूल कार्यस्थल: यौन उत्पीड़न से सुरक्षा, मातृत्व लाभ, लचीले कार्य घंटे और क्रेच सुविधाएँ महिलाओं की कार्यबल भागीदारी बढ़ा सकती हैं।

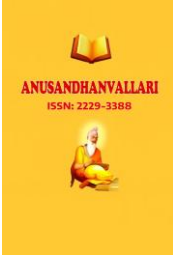
वित्तीय सहायता और उद्यमिता समर्थन: छोटे ऋण, सब्सिडी, प्रशिक्षण और बाज़ार तक पहुंच के माध्यम से महिला उद्यमिता को मजबूत किया जा सकता है। SHGs को और प्रभावी बनाना चाहिए।

परिवारिक समर्थन को प्रोत्साहित करना: महिलाओं के आर्थिक निर्णयों और कामकाज में परिवार की सकारात्मक भूमिका आवश्यक है। यह सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण आधार है।

नीतिगत सुधार: नई आर्थिक नीतियाँ महिलाओं की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर बनाई जाएँ—जैसे लैंगिक बजटिंग, समान वेतन नीति और महिला-उन्मुख स्टार्टअप योजनाएँ।

संदर्भ:

- [1] Devi, S. (2018). *Bhartiya samaj mein mahila sashaktikaran: Ek samajshastriya adhyayan* [भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन]. New Delhi: Prakashan Sansthan.
- [2] Sharma, R. (2017). *Mahilaon ki arthik sthiti aur samajik swikriti* [महिलाओं की आर्थिक स्थिति और सामाजिक स्वीकृति]. Jaipur: RBS Publications.
- [3] Mishra, R. (2019). *Aadhunik parivesh mein mahilaon ki bhoomika* [आधुनिक परिवेश में महिलाओं की भूमिका]. Varanasi: Gyan Bharti.



-
- [4] Tiwari, A. (2020). *Mahila rozgar evam samajik badlav* [महिला रोजगार एवं सामाजिक बदलाव]. Lucknow: Awadh Prakashan.
- [5] Kaushal, N. (2016). *Linga-samata aur mahila vikas* [लिंग समानता और महिला विकास]. Delhi: Rajkamal Prakashan.
- [6] Yadav, P. (2021). *Mahila udhyamita aur arthik swawlamban* [महिला उद्यमिता और आर्थिक स्वावलंबन]. Ghaziabad: Unnati Prakashan.
- [7] Kabeer, N. (2012). *Women's economic empowerment and inclusive growth: Labour markets and enterprise development*. London: IDRC.
- [8] World Bank. (2020). *Women, Business and the Law 2020*. Washington, DC: World Bank Publications.
- [9] International Labour Organization. (2018). *Global employment trends for women 2018*. Geneva: ILO.
- [10] Chen, M. (2021). *Women's work and the digital economy: New opportunities and challenges*. Journal of Gender Studies, 28(4), 512–526.